Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 9, June-2019, ISSN 2230-7540

बुद्ध के विचारों में मानव जीवन की प्रासांगिकता

Dr. Sunita*

Ph.D., M.Phil., NET

सार – *वर्तमान समय में बुद्ध के विचारों की प्रासंगिकता मानव जीवन को सुखमय बनाने के लिए भगवान बुद्ध ने बहुत सी शिक्षाओं पर अपने विचार प्रस्तुत किए। भगवान बुद्ध ने प्रकृति के नियमों का गहन अध्ययन किया और वे इस नतीजे पर पहुँचे कि जो नियम बाहर वातावरण में काम कर रहे हैं, वहीं नियम हमारे शरीर के अन्दर भी काम कर रहे हैं। मानव जीवन की मूल समस्या है कि राग, द्वेश, मोह, घृणा, लालच और भय। यही समसया आपसी लड़ाई, एक-दूसरे के साथ युद्ध, आर्थिक समानता, शोषण, अत्याचार, भेद-भाव, हिंसा और आतंकवाद को जन्म देते हैं। यह ऐसी मूलभूत समसयाएं हैं जो हर युग में रहेंगी। केवल उनका रूप और स्थान बदलते हैं। यह समसयाएं जितनी बुद्ध के समय में थीं, आज उससे भी अधिक हैं। इस प्रकार भगवान बुद्ध ने मानव जीवन और उसके आस-पास के वातावरण से सम्बन्धित हर पहलू पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं।*

----------X----------

आमदनी और खर्च का संतुलन या आय-व्यय का संतुलन

भगवान बुद्ध इस बात को अच्छी तरह समझते थे कि इन्सान की भौतिक सुख-सुविधाओं के लिए आर्थिक स्थिरता का होना जरूरी है। इसलिए उन्होंने लोगों को अत्याधिक मेहनत और ईमानदारी से, दूसरों का शोषण किए बगैर, वैसे ही पैसे कमाने को कहा जैसे कि 'मधुमक्खी फूलों को कोई नुकशांन पहुँचाए बिना ही उनसे शहद निकालती है।[1] उन्होंने कहा एक गृहस्थ मनुष्य के पास न्यायतः बड़े परिरम से, बाहुबल से, पसीना बहाकर कमाया हुआ धन होना चाहिए।[2] बुद्ध का कहिना था कि मनुष्य को धन कमाने में किसी प्रकार का आलस नहीं करना चाहिए और सर्दी-गर्मी, धूप-छांव आदि की परवाह न करके अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए धन कमाना चाहिए।[3] आजीविका जायज तरीके से और अहिंसात्मक तरीके (ढंग) से ही कमानी चाहिए।[4]

धन कमाने का उद्देश्य पारिवारिक और सामाजिक जिम्मेदारियों को निभाने के लिए होना चाहिए न कि धन इकट्ठा करने के लिए, बुद्ध ने ऐसे गृहस्थ की तुलना गांव शहर के निटक स्थित स्वच्छ नीले और शीतल जल वाली ऐसी झील से की जिसके पानी को लोग पी सकते हैं, उससे नहा सकते हैं और अन्य उपयोगों में ला सकते हैं।[5]

समान सामाजिकता:

भगवान बुद्ध ने अपने धम्म में समता और बराबरी पर बहुत जोर दिया। उन्होंने समाज में लोगों के बीच समानता की न केवल शिक्षा दी बल्कि स्वयं भी उस पर अमल किया। उन्होंने महिलाओं को दीक्षा का अधिकार देकर भिक्खुणी बनने का मौका दिया और दुनियाँ के इतिहास में पहली बार एक पृथक और स्वतंत्र भिक्खुणी संघ की स्थापना की। स्त्रियों को बराबरी का हक देने वाले भगवान बुद्ध विश्व के पहले धम्म गुरु बने।[6] गौतम बुद्ध से पहले, वैदिक व्यवस्था में स्त्रियों को बराबरी का अधिकार नहीं था। उनको यज्ञोपवीत का भी अधिकार नहीं था। ऐसे में गौतम बुद्ध ने उनको बराबरी का दर्जा देकर समाज में उनको अपना महत्व अनुभव करने का मौका दिया, जिससे स्त्रियों में अपने प्रति गौरव और आदर का भाव तो जागा ही, सामाजिक दृष्टिकोण में भी उनके प्रति परिवर्तन आया। गौतम बुद्ध ने स्त्रियों की शिक्षा और राजनैतिक जागरूकता पर भी बल दिया।[7]

बुद्ध का लोकतंत्र:

भगवान बुद्ध ने प्रजातान्त्रिक मूल्यों को बहुत महत्त्व दिया। विभिन्न राज्यों के राजाओं और शासन के अधिकारियों को उन्होंने सलाह दी कि कामकाज निश्चित कानून और नियमों के अनुसार चलना चाहिए और अगर नियम और कानून बदलने हों तो बाकायदा जनप्रतिनिधि सभा (जैसे आज

www.ignited.in

संसद है, विधानसभा है) में उस पर बहस होकर वहाँ से मंजूर होना चाहिए। उन्होंने सलाह दी कि राज्य के विभिन्न विभागों में बराबर तालमेल होना चाहिए और परस्पर अविष्वास की स्थिति नहीं रहनी चाहिए।[8]

आधुनिक समस्याओं का हलः

भगवान बुद्ध ने अपने आर्थिक और राजनीतिक विचार चक्कवत्ती सिंहवाद सूत्र और कूटदन्त सूत्र. में व्यक्त किए हैं। उन्होंने कहा, 'चोरी, हिंसा, नफरत, निर्दयता जैसे अपराधों और अनैतिक कार्यो का कारण गरीबी है।'[9] इन अपराधों की सजा देकर नहीं रोका जा सकता बल्कि लोगों की समस्याओं की जड़ को समाप्त किया जा सके। आज जब भारतवर्श में कश्मीर से लेकर उत्तर पूर्व के विभिन्न राज्य हिंसा और आतंकवाद से जूझ रहे हैं, बुद्ध की कुटदंत सूत्र में दी गई शिक्षा और अधिक प्रासंगिक जान पड़ती है।[10]

शासन से धम्मः

राजधर्म समझते हुए गौतम बुद्ध कहते हैं, राजा को कोई निर्णय जल्दबाजी में नहीं लेना चाहिए।[11] इसी तरह एक अन्य प्रसंग में उन्होंने कहा - 'राजा को मुकदमों का फैसला धर्म से न्याय से करना चाहिए। राग, द्वेश आदि विकारों के वशीभूत होकर नहीं।12 जातक कथा में भगवान बुद्ध ने राजा के दस कत्तव्य बताए हैं।

सर्वधम्म समभावः

भगवान बुद्ध सर्वधर्म समभाव के पक्षधर थे। उन्होंने कभी अपनी शिक्षाओं की प्रशंसा की न तो जरूरत से ज्यादा महत्त्व दिया और न ही उसकी आलोचना करने वालों की निन्दा की। अम्बालयिका में ब्रहमजाल सूत्र को उपदेश देते हुए उन्होंने कहा, "भिक्खुओं, जब भी आप लोग मेरी या सद्धर्म मार्ग की आलोचना सुनें, तो उस पर न तो क्रोध करने की, न परेशान होने और न ही अमर्श अनुभव करने की आवश्यकता है। ऐसी भावनाओं से ज्यादा आपकी अपनी ही हानि होगी। जब भी कोई मेरी या सद्धर्म मार्ग की प्रशंसा करे, तब भी प्रसन्न, हर्शित अथवा संतोष की भावनाएं मन में मत आने दीजिए। इनसे भी आपकी स्वयं की ही हानि होगी।13

श्रम का महत्त्व:

भगवान बुद्ध श्रम को महत्त्व देते थे। श्रमिकों को वे सम्मान की दृश्टि से देखते थे। भगवान बुद्ध श्रमण संस्कृति के थे। श्रमण का अर्थ ही होता हे कि किसी की कृपा के भरोसे न जी कर, खुद के श्रम द्वारा मुक्त अवस्था तक पहुँचना।[14]

प्रेम और सौहार्द का महत्त्व:

बुद्ध ने कहा, "प्रेम कई तरह के होते हैं, प्रेम के स्वभाव को जानिए। प्रेम जीवन में बहुत जरूरी है लेकिन प्रेम कामवासना के वशीभूत होकर आकर्शण, भेदभाव और पूर्वाग्रहों पर आधारित नहीं होना चाहिए। प्रेम मैत्री और करूणा पर आधारित होना चाहिए।[15]

अंतर्राष्ट्रीय संबंधः-

पूरी दुनिया में आजकल हिंसा, डर और आतंक का माहौल बना हुआ है और हम तनाव में जी रहे हैं। हर देश दूसरे देश को शक की निगाह से देख रहा है। विज्ञान का भीषण नरसंहारक हथियार बनाने में दुरूपयोग किया गया है। पूरी मानव जाति विनाश के कगार पर खड़ी हुई है। लोग एक अजीब से डर और आतंक के माहौल में जीने को मजबूर किए जा रहे हैं। ऐसे में बुद्ध की शिक्षाएं पहले से भी ज्यादा प्रासंगिक हो गई हैं। 'बैर से बैर कभी शान्त नहीं होता और अबैर से ही बैर शांन्त होता है। यही संसार का सनातन नियम है।'[16] भगवान बुद्ध का यह उपदेश विश्व में शांन्ति बनाए रखने के लिए अति आवश्यक है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि भगवान बुद्ध ने मानव जीवन को सुखमय बनाने के लिए बहुत सी शिक्षाओं पर अपने विचार प्रस्तुत किए जिन विचारों की आज के युग में भी प्रासंगिकता है या उतना ही महत्त्व है जितना कि बुद्ध के समय में। भगवान बुद्ध ने आय-व्यय में संतुलन बनाये रखने, समाज में लोगों के तीन समानता बनाये रखने, प्राजातांत्रिक मूल्यों का महत्त्व, सर्वधम्म समभाव, श्रम का महत्त्व, अंतर्राष्ट्रीय संबंध और सामाजिक व धार्मिक परिवर्तन। भगवान बुद्ध के इन विचारों को अपनाकर व उनके बताए रास्ते पर चलकर हम प्रत्येक समस्या का हल ढूंढ सकते हैं।

संदर्भ सूची:

1. दीघा निकाय-3

2. सुत्तवेफ्त कड़वे-33

www.ignited.in

3. मज्झिम निकाय-पृ. 85

4. संयुत्त निकाय-4, पृ. 266

5. संयुत्त निकाय-1, पृ. 90

6. कांचा इलाया, "गॉड एज पॉलिठीकल फिलोसॉफरः बुद्धाज चैलेंज टू ब्राह्मनीज्म" साम्य, कोलकाता, 2001, पृ. 1185

7. नारद, "दि बुद्धा एण्ड हिज टीचिंग्स", बुद्धिस्ट मिशनरी सोसायअी, कुआलालम्पुर, मलैशिया, 1988

8. डॉ. भीमराव आंबेडकर, "भगवान बुद्ध और उनका धर्म, सिद्धार्थ प्रकाशन, मुम्बई।

9. आनंद श्रीकृष्ण, "भगवान बुद्ध व धम्म चर्या", समृद्ध भारत प्रकाशन, मुंबई, अध्याय 2

10. वही या उपरोक्त

11. आचार्य सत्यनारायण गोयन्का, "राजधर्म कुछ ऐतिहासिक प्रसंग", विपस्सना विशोधन केंद्र, इगतपुरी

12. उपरोक्त

13. तिक न्यात हन्ह, "जहं जहं चरन परे गौतम के", हिंद पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, 2001.

14. आनंद श्रीकृष्ण, "भगवान बुद्ध व धम्म चर्या, समृद्ध भारत प्रकाशन, मुंबई, अध्याय 2

15. उपरोक्त

16. धम्मपद 1.5

Corresponding Author

Dr. Sunita*

Ph.D., M.Phil., NET

www.ignited.in